अनुसन्धान का अर्थ एवं परिभाषा

अर्चना शुक्ला, शोध छात्रा
चाँदपुर सलोरी, कैलाशपुरी,
तेलियरगंज, जिला- प्रयागराज

सारांश : शोध, खोज, अनुसन्धान, अन्वेषण, गवेषणा सभी हिंदी में पर्यायवाची शब्द है. इसी को मराठी में संशोधन और अंग्रेजी में रिसर्च कहते है खोज में सर्वथा नूतन सृष्टि का नहीं, अज्ञात को ज्ञात करने का भाव है. मनुष्य बुद्धि सम्पन्न प्राणी होने के कारण अपनी सचेतना से ही जिज्ञासु रहा है. वह 'अहम्' (आत्मा), 'इदं' (सृष्टि या जगत) और 'सः' (ब्रह्म, परमात्मा) को जानने के लिए पर्युल्सुक रहा है. दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि अनुसंधान अथवा शोध उस प्रक्रिया या कार्य का नाम है जिसमे बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उनका अवलोकन-विश्लेषण करके नये तथ्यों या सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है. पहले अज्ञात वस्तुओं, तथ्यों या सिद्धांतों के अविष्कार कि बोधपूर्वक क्रिया ही अनुसन्धान है.

बीज शब्द : शोध, खोज, अनुसन्धान, अन्वेषण, गवेषणा, क्षेत्रीय सर्वेक्षण, नवीनीकरण.

शोध का अर्थ : यद्यपि अनुसन्धान का इस तरह एक सामान्य परिचय दिया जा सकता है, तो भी ज्ञान के विविध क्षेत्रों के विविध अनुसन्धान कार्यों का अवलोकन करने पर ज्ञात होगा कि उनकी प्रक्रियाओं, पद्धतियों और परिणामों के स्वरुपों में काफी भिन्नता होती है और सबको एक सुनिश्चित, नपी-तुली परिभाषा में बाँधना संभव नहीं है. कुछ अनुसन्धानों में पदार्थ-परक वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा उनके परिणामों का आविष्कार होगा, तो कुछ में विशाल क्षेत्रीय सर्वेक्षण द्वारा कुछ सामान्य तत्वों का उद्घाटन होगा, कुछ में प्रमाणों के आधार पर सैद्धांतिक

सामान्यीकरण का प्रयास होगा तो कुछ में किसी विषय पर मत मतान्तरों का विवेचन कर नये मत कि स्थापना का प्रयत्न होगा.

जैसा कि प्रारम्भ में ही उल्लेख किया है कि शोध के लिए अनुसन्धान, खोज, अन्वेषण और गवेषणा आदि शब्द प्रयुक्त होते है लेखिन छात्रों कि जानकारी के लिए मात्र यह सूचित किया जाता है कि इनमें से 'शोध' और 'अनुसन्धान' अधिक प्रचलित है. संक्षिप्तता और प्रायोगिक सुविधा के कारण 'शोध' का व्यापक प्रचार है (शोध-छात्र, शोध-प्रबन्ध, शोध-निर्देशक, शोध-कार्य आदि में) तो भी 'अनुसन्धान' (अनु+सं+धा) शब्द अर्थ की दृष्टि से अधिक उचित मन जाता है. गोविन्द त्रिगुणायत (१९६०) के मत में अंग्रेजी 'रिसर्च' में समाहित खोज, पूछताछ, छानबीन, परिक्षण और निर्णय इनके अतिरिक्त व्याख्या और गूढ़ चिंतन को भी 'अनुसन्धान' शब्द अभिव्यक्त करता है.

डॉ. नागेंद्र के अनुसार, "अनुसन्धान का अर्थ है दिशा और अनु का अर्थ है पीछे. इस तरह अनुसन्धान का अर्थ हुआ किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष में बढ़ना.

आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के अनुसार, "अज्ञात तथ्यों का उद्घाटन, बिखरे तथ्यों का संयोजन, विषय से सम्बन्धित सामग्री का, प्राप्त, सामग्री का सुनियोजन और विश्लेषण.

इस तरह अनुसन्धान मूलतः किसी विषय के अध्ययन या विषय की सुनिश्चित क्रिया पद्धति है जिसमें अनुसन्धान के तटस्थ भाव से पूर्वग्रहित होकर प्रयोग, सूक्ष्म पर्यवेक्षण द्वारा यथावत निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करता है तथा भ्रमों का निवारण करता हुआ पुराने तथ्यों को नया परिप्रेक्ष्य देते हुए ज्ञात तथ्यों को प्रमाणिकता प्रदान करता है.

मनुष्य की पूर्वतः प्रवृति भी थी कि अपनी आवश्यकताओं कि पूर्ति हेतु व् नये तथ्यों को खोजकर अपनी उपयोगिता सिद्ध का प्रयोग देता था. नव पाषाण

कल में आग कि खोज करना, पत्थरों को औजार के रूप में उपयोग करना जिसका आज पूर्णतः नवीनीकरण हो चूका है. वेदों व पुराणों के तथ्यों के आधार पर ईश्वरत्व कि उपस्थिति का आभाव कराना आदि शोध तो सतत् होते रहे है.

शोध हमारी पुरानी तथ्यात्मक जानकारी को परिमार्जित करके उसमें नवीनीकरण कर उसकी प्रमाणिकता को दर्शाता है.

डबल्यू. एम. मुनरो के अनुसार, "अनुसन्धान उन समस्याओं के एक अध्ययन कि विधि है जिसका अपूर्ण तथा पूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूंढना है.

अनुसन्धान के लिए तथ्य लोगों के मतों के कथन, ऐतिहासिक तथ्य, लेख अथवा अभिलेख, परीक्षणों से प्राप्त सामग्री हो सकती है."

शोध में आलोचना के जरिये रचना के मूल संदेशो कि अभिव्यक्ति संभव होती है. शोध की दृस्टि सत्य के अन्योन्य तथ्यों के संग्रहण, संयोजन एवं निर्णय की अनिवार्यता पर निर्भर है. शोध प्रक्रिया में प्रविधियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. शोध में तथ्यों के संकलन संग्रहण के आधार पर ही किसी निर्णय पर पहुँचा जा सकता है. शोध में विश्लेषण सबसे पहले जरूरी होता है. शोध में सत्य का उद्घाटन एवं संशोधन अनेक तथ्यों का गहन अध्ययन विश्लेषण करने के उपरान्त प्रकाश में आता है.

शोध प्रविधियाँ : शोध प्रविधियों में उन कतिपय आधारों की विवेचना की जाती है जिनका उपयोग साहित्यिक अनुसन्धान या शोध के लिए किया जाता है. अधिकांश विद्वानों ने शोध प्रविधियों को तीन आधारों पर वर्गीकृत किया है-

(1) ऐतिहासिक - भूतकालिक

(2) वर्णनात्मक - वर्तमानकालिक

(3) प्रयोगात्मक - भविष्यकालिक

अनुसन्धान कार्य यदि बहुत काल से जुड़ा हो तो ऐतिहासिक, वर्तमान का जुड़ा हो तो वर्णनात्मक और यदि भविष्य से सम्बद्ध हो तो प्रयोगात्मक होगा.

कला और मानविकी विषयों से जुड़े समस्त अनुसन्धान कार्य या तो ऐतिहासिक आधार पर सम्पन्न किये जाते है अथवा सर्वेक्षणों के जरिये किसी निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करते है. अनुसन्धान की प्रयोगात्मक विधि पूर्णतः वैज्ञानिक एवं भविष्योन्मुखी होती है.

वर्णनात्मक अनुसन्धान पद्धति वर्तमान कलिक होने के कारण सर्वेक्षण के आंकड़ों के संचयन के लिए अधिक सुविधाजनक होती है. इसके विपरीत साहित्यिक अनुसन्धान के अन्तर्गत ये प्रविधियाँ इसलिए अधिक कारगर सिद्ध नहीं हो पाती क्योंकि साहित्य अन्तर्मुखी होता है. साहित्य व्यक्ति की अन्तश्चेतना और प्रवित्तियों का परिचायक होता है. भाषा, विज्ञान के क्षेत्र में वर्तमान कालिक आधार उपयोगी हो सकती है. जहाँ तक प्रयोगात्मक अथवा वैज्ञानिक अनुसन्धान का सम्बन्ध उसे साहित्य पर हूँ-ब-हूँ लागू तो नहीं कर सकते उनकी कुछ कसौटियों को अवश्य ग्रहण कर सकते है.

शोध प्राविदयों का परिचय-

(1) ऐतिहासिक शोध प्राविधि- ऐतिहासिक शोध में मानव के विविध दिशाओं जैसे साहित्य, संस्कृति, भाषा, विज्ञान आदि में होने वाले भूतकालिक प्रयत्नों, कार्यों का वैज्ञानिक पद्धति से अन्वेषण होता है जिससे अतीत को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझने की सुविधा हो सके.

ऐतिहासिक अनुसन्धान के सम्बन्ध में जॉन डब्ल्यू बेस्ट की मान्यता है- "ऐतिहासिक अनुसन्धान के सम्बन्ध ऐतिहासिक समस्याओं के वैज्ञानिक विश्लेषण से है. इसके विभिन्न पद्भूत के सम्बन्ध में एक नई सूझ पैदा करते है जिसका सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य से होता है.

ऐतिहासिक अनुसन्धान को निम्नलिखित चार भागों में विभक्त किया जा सकता है-

(1) तथ्यात्मक पद्धति - ऐतिहासिक अनुसन्धान की तथ्यात्मक पद्धति तथ्यों के माध्यम से समस्या का निराकरण करती है. तथ्य वर्तमान व भूतकालिक दोनों हो सकते है. शिलालेख, प्राचीनतम अभिलेखों, लिपियों, पुस्तकों में निहित तथ्यों को परिस्कृत कर उसके माध्यम से निष्कर्ष निकाले जाते है.

(2) प्रवृत्यात्मक पद्धति - प्रवृत्यात्मक पद्धति में किसी भी कृति समस्या और स्रोत विषय का अध्ययन वाह्य एवं आभ्यंतर दो रीतियों से किया जाता है. प्रवृत्यात्मक पद्धति का उल्लेख सर्वप्रथम विश्व सभ्यता के अध्ययन हेतु सोरीकिन द्वारा किया गया. इस पद्धति में परम्परा, कृति, कृतिकार उसका परिवेश एवं साथ ही शोधार्थी की मनःस्थिति भी स्वयं शामिल होती है.

(3) रूपात्मक पद्धति - रूपात्मक पद्धति के अन्तर्गत वास्तु विन्यास चरित्रांकन विधाएँ एवं बोली को लिया जाता है. यह पद्धति पूर्णतः साहित्यिक शोध के उपयुक्त होती है. ऐतिहासिक अनुसन्धान के क्षेत्र में रूपात्मक पद्धति का इस्तेमाल साहित्य की अन्य विधाओं के वर्गीकरण कृतियों में चित्रित विभिन्न चरित्रों आदि के अनुकूल भाषा शैली के अलग-अलग रूपों का अध्ययन आदि किया जा सकता है.

"रूपात्मक पद्धति के अन्तर्गत शास्त्रीय मान्यताओं का विशेष महत्व है साहित्यिक शास्त्र के अन्तर्गत भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षकों ने अनेक विधाओं का अध्ययन किया है. जिनमें कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध प्रमुख हैं.

(A) तुलनात्मक पद्धति - ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धतियों में तुलनात्मक पद्धति अपेक्षाकृत नई है. इस पद्धति में सम-सामयिकता एवं एक ही विषयवस्तु को आधार बनाकर अनेक रचनाओं के प्रणयन के अलग अलग घटकों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है.

(B) वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण प्रधान अनुसन्धान - वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण प्रधान शोध में मानव जीवन की सभी वर्तमान समस्याओं पर चाहे वे साहित्य, समाज, विज्ञान या शुद्ध विज्ञान से सम्बन्ध रखती हो अनुसन्धान किया जाता है.

वर्णनात्मक शोध में तथ्यों का संकलन मात्र न होकर उनकी व्याख्या होती है और मूल्याङ्कन होता है. सामाजिक विज्ञानियों ने इस प्रकार के शोध का निश्चित पारिभाषिक शब्द स्थिर नहीं किया, कोई इसे वर्णनात्मक शोध और कोई 'सर्वेक्षण शोध' कहता है.

"सर्वेक्षण" या "सर्वे शोध" इसका प्रयोग शिक्षा तथा समाजशास्त्रीय विषयों में होता है. इसमें समाज से सम्बन्ध तथ्यों का निरीक्षण और संकलन किया जाता है. उसका सामान्य सांख्यिकी से सम्बन्ध रहता है. यह निश्चित समस्या का सावधानीपूर्ण विश्लेषण सहित तर्कपूर्ण हल प्रस्तुत करना है. इस प्रणाली के अन्तर्गत, शैक्षणीय समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्रीय भाषा-विज्ञानीय आदि सर्वे-कार्य संपन्न होते हैं.

(C) प्रयोगात्मक शोध - प्रयोगात्मक शोध से सावधानीपूर्वक नियन्त्रित परिस्थिति में किसी समस्या का क्या परिणाम निकलेगा. यह ज्ञात होता है. यह विज्ञान की प्रयोगशाला की प्राचीन पद्धति है. यह प्राविधि अन्य प्रकार के शोधों से अधिक जटिल है. इसकी उपयोगिता सुव्यवस्थित और नियन्त्रित प्रयोगशालाओं में ही शामिल हो जाती है.

यदि दो स्थितियाँ प्रत्येक दशा में सामान हो और उनमें से एक में एक तत्व को जोड़ दिया जाए पर दूसरे में न जोड़ा जाए तो उस स्थिति से जो अन्तर आएगा वह जोड़े हुए तत्व का परिणाम होगा अथवा दो सामान स्थितियों में से केवल एक से एक तत्व घटा दिया जाए तो घटाने से जो अन्तर आएगा वह उस घटाए हुए तत्व का परिणाम होगा. इसी प्रकार प्रयोगात्मकता की साहित्य में प्रयोग की सम्भावनाएँ अधिक है. जिस प्रकार मनोविज्ञान अन्तश्चेतना एवं मनुष्य की जन्मजात प्राविर्तियों का अध्ययन विभिन्न प्रयोगों के जरिये सम्पादित करता है. उसी प्रकार साहित्य व्यक्ति व समाज की चित्तवृत्तियों का सांकेतिक एवं

विश्लेषणात्मक स्वरुप उपस्थित करता है.अवस्था एवं कालभेद के कारण हमें ऐसा लगता है कि विज्ञान अलग है और साहित्य अलग.

एक शोधार्थी के रूप में हमें शोध के विषय विश्लेषण कि क्षमता के आधार पर हम शोध कि साहित्यिक प्रविधियों का अध्ययन अलग अलग विषयों के सन्दर्भों और उनके दृस्टिकोणों के माध्यम से करते हैं. शोध प्रविधियों के आधार पर अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में अलग-अलग शोध प्रविधियों का अनुशीलन और आकलन कर शोध कार्य करते है. यह शोध प्रविधियाँ निम्नलिखित है-

(1) समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि

(2) आलोचनात्मक शोध प्रविधि

(3) मार्क्सवादी अनुसन्धान पद्धति

(4) मनोवैज्ञानिक शोध प्रविधि

(5) भाषा वैज्ञानिक शोध पद्धति

(6) संरचनावादी शोध प्रविधि

(7) काव्यशास्त्रीय शोध प्रविधि

(8) परम्परा का शोध-प्रविधि के रूप में अनुशीलन

(9) नई अनुसन्धान प्रविधि कि सम्भावनाएँ

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शोध प्रविधि - डॉ विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. अनुसन्धान प्रविधि, सिद्धान्त और प्रक्रिया- एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. साहित्यिक अनुसन्धान-डॉ रामेश्वर पाण्डेय, नवदीप प्रकाशन, दिल्ली
4. नवीन शोध विज्ञान-डॉ तिलक सिंह, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली